

प्रकाशक :
द्विधा प्रकाशन
मुजानगढ़ (राजस्थान)

पोथी मिलन की जगह
श्री जंप्रकाश सेठिया
३, मंगो सेन
कलकत्ता-७०० ००१

सगना इस्कार लिखारै रा है ।

मोन : पचास गिपिया

स्थापनियों :
दि टैक्निकल एण्ड जनरल प्रेस
१७, ब्रूकेट सेन,
कलकत्ता-७०० ०६६

पुस्तकालय
कुमारगंगा गंगा अराज्य संस्थान
श्री-190, वृत्तिमित्री मार्ग
ब.पू. 1.41, जयपुर-302015

दिवलै री लौ

आ 'सतवाणी' कोई सन्तां, अवधूतां री भाख्योड़ी कोनी फेर भी में म्हारी
इण पोथी री नांव 'सतवाणी' दियो है। मनै ठा है'क स्याणा भिनखां नै
ओ नांव गमतो कोनी लागं इण उपरांत भी बं इण पोथी नै घणं हेत स्यूं पढसी
इण री मनै पूरो पतियारो है।

दिवलो सूरज री ठौड कोनी ले सकं पण वो आप री लौ री नोक स्यूं अघेरं
रै दुरभेद परकोटं मे एक नानूं सो'क छेक्लो जरूर कर सकं है जकै स्यू ही वगत
आया सूरज भगवान वारं पधारसी'र आखी सिस्टी नै आप री कंचन वरण उजास
वांटसी।

मं ही म्हारं दीवट पर बैठो म्हारी निमली पडती दीठ स्यू जे वीं आतं उजास
री पैली किरण नै देख सक स्यू तो निज नै घणो बडभागी मान स्यू।

वसन्त पंचमी
विक्रम सं० २०४४

कन्हैयालाल सेठिया

मोती	मीपी
१. हुवै न सत् री परपरा	एक
२. रयो हुवै निज रो धणी	"
३. भेख धरचां टोर् रल्यां	"
४ दीठ ह्यां सत भाससी	दो
५. नहीं भेख मे दीठ मे	"
६. थित गत रो समतोल है	"
७. मोटो समझ आप नै	तीन
८ घड़ी समझ जिण नै कसी	"
९. कुदरत पाल बोज नै	"
१०. सबद चल कोनी सकै	चार
११. स्थाही कागद कलम जड	"
१२. जकी चेतणा जीव मे	"
१३. पडसी पाछो खेत मे	पाच
१४. काल मालां री रयण	"
१५. सूरज कद आर्य उगै	"
१६. बरस्यो धारोधार पण	छह
१७. काल नही दूटै, जकी	"
१८. तिरवालो घी तैल रो	"
१९. जका सूर रै बस रा	सात
२०. जाऊ जाऊ मन करै	"
२१. चिणियो आंगल नौव पर	"
२२. खुली छोड मत आख नै	आठ
२३. रमै रमतिया सास री	"
२४. सुख दुख करमा लार है	"

२५.	घाट घाट ममतो फिरघो	...	नौ
२६.	राखी मन रो म्यान में	..	"
२७.	गिरं जर्क मे हो रवं	...	"
२८.	जड चैतण रो उमर वण	.	दस
२९.	तन न मोटो कर ठगी	.	"
३०.	संत सबद मित्र नैण है	.	"
३१.	सुवरण सुवरण हो रवं		ग्यारह
३२.	अणु स्पृ करं कुचेरणी	.	"
३३.	जीव पावणों तू अठं	..	"
३४.	यलम तीर मन बावरी	.	बारह
३५.	तू भोला वन मे गयो	...	"
३६.	निरयक पूजा सेयना	..	"
३७.	चावं हूणो भय मुगत	.	तेरह
३८.	आम नीम नेटा उग्या	.	"
३९.	गगन थान पुरम्यो ममद		"
४०.	दिन रो धोला हांसलो	.	चववह
४१.	बंघण्यो भोला बगत स्पृ	..	"
४२.	गगन पून घर में बसं	...	"
४३.	तू जाण्यो पण कद करी	.	पदरं
४४.	मियो नहीं जावं मतं	..	"
४५.	फिरं भाग्यतो परवचन	.	"
४६.	बर निनाण निमणा नसं	..	सोन्
४७.	नहो मयद बोन् भयूं	.	"
४८.	कोजो कादो राग रो	..	"
४९.	जद जद मे भादो हूयो	..	मतरं
५०.	उमर टमो अणचेन में	..	"

मोती

सीपी

५१.	समद सूख सूरज बुझै	सतरै
५२.	सबद सूर कायर सबद	अठारै
५३.	सबद बाँध दै जीव नै	"
५४.	नित धोचो करतो रवू	"
५५.	काल् कनोई, गगन री	उगणीस
५६.	बूद समद री मावड़ी	"
५७.	मन करसो हल् जीभड़ी	"
५८.	बोणै पैली दोठ कर	बीस
५९.	जको निरजण कद करै	"
६०.	रच्या न सुख दुख वो जको	"
६१.	काला धोला बादला	इक्कीस
६२.	अकथ साच नै कथ सकै	"
६३.	रतन साथ ले ज्याण नै	"
६४.	नहीं सकै दिवलो भुला	बाईस
६५.	कद इच्छ्यो तू जलम नै	"
६६.	फिरै फिरकली जद हुवै	"
६७.	बांस हुवै डोघा घणां	तेईस
६८.	काम हुवै थारै करचो	"
६९.	आंधो धुंऊं विकार रो	"
७०.	देस, काल् नै देख पण	चौईस
७१.	बैठो काल् विसायती	"
७२.	काल व्याघ तंवू गगन	"
७३.	काज बीज चातर चुगै	पचीस
७४.	आंधी आई जद गया	"
७५.	जको रवै निज भाव मे	"
७६.	काल्बेलियं बगत री	छाईस

मोनी

मोपी

७७	गुण गिणनी मे आ सक	.	छाईस
७८	फुलड़ा आक गुलाब रा	..	"
७९.	पोय्या पड पण तू मती	.	सताईस
८०.	रचना बा जिण में दिख	...	"
८१.	पगा पट गेला ह्व	.	"
८२.	मजल बता पनी मन		अठाईस
८३	आलु बंटी चिडकली	..	"
८४.	नभ माचो दिन सोडियो	.	"
८५.	दोठ पांगली जा परो		गुणतीस
८६.	ल्यायो लाठी मन भरद	..	"
८७.	भाण सिनगती बेपडो	..	"
८८.	भाण मिरकली घीव सो	.	तीस
८९.	पग धरती, सूंटी अनल		"
९०.	मत अरजण रो धिमरजण	.	"
९१.	बंटी बाई माच है		इकतीस
९२.	मगतर बणग्या सासतर	..	"
९३.	सूरज बंद आयें उगें	..	"
९४.	मन राजा दनरघां प्रजा		बतीस
९५.	नफ भर बोई बीज मत	.	"
९६.	चिणगारी सोनं जिमी		"
९७	मांस जठे पूगें बटें	.	तेनीस
९८.	बंधण बंधन फूल रो	..	"
९९	अजममनी मन तेवडी	..	"
१००.	अजगिन रं नेडो गयो	...	चौतीस
१०१.	विपद पड्यां मागे रयें	...	"
१०२.	घोस अंधेरे मधुं मिता	..	"

मोती

सोपी

१०३.	हर सिरजण रं मूल मे	पंतीस
१०४.	दीसँ देतो हाय स्थू	"
१०५.	जतँ भागसी राम री	"
१०६.	कीड़ी कण, मण रो करं	छतीस
१०७.	इंछै कोनी की जको	"
१०८.	हीरां रा खाजा करचा	"
१०९.	फिरँ मांगतो भूगड़ा	संतीस
११०.	दीवट पर दिवलो चसँ	"
१११.	मोसँ मिणियो साच रो	"
११२.	माटी मा नारायणी	अड़तीस
११३.	जलमँ शतपद कंसलो	"
११४.	अमी सरोसी मसि सरस	"
११५.	गावँ जिण रं गीत नँ	गुणचालीस
११६.	हूँता खोड़ा हिरणियां	"
११७.	नौद मुंद्यं नैणां दिखँ	"
११८.	खिण रं लारँ खिण गई	चालीस
११९.	नैण मुडागं पथ वो	"
१२०.	कर लँ छीणी नँ कलम	"
१२१.	एक बेजको जे हुवँ	इगतालीस
१२२.	पूग गाव रं गौरवँ	"
१२३.	पणिहारी, पाणी, घड़ो	"
१२४.	मुगता चुगतां हंस नँ	बयालीस
१२५.	पोल ढकीजँ बावला	"
१२६.	कता दरब के गुण घरम	"
१२७.	इंछ्या री मछली चपल	तयालीस
१२८.	तणो मून है रूख रो	"

मोती

सीपी

१२६.	गिण मत उण रा गासिया	. .	तयांलीस
१३०.	दौरी विरती छूटणी	. .	चमांलीस
१३१.	दुरगम मोटै भाखरां		"
१३२.	भाण कनै कुण जा सकै	.	"
१३३.	फल इसड़ा जिण नै चखै	.	पेंतालीस
१३४.	दोठ थकी दा ममझगी	.	"
१३५.	लिह्या न मं खाता वही		"
१३६.	उड्यो वायरै साथ तिण		छियालीस
१३७.	गैरो जा चावै हुवै		"
१३८.	फिरा आंगली परख तू	...	"
१३९.	देख काच मे मोलियो		सैंतालीस
१४०.	दोठ गई पण नैण रो	. .	"
१४१.	मोटा घणा मतीरिया		"
१४२.	हर कोई नै पुरस मत		अड़तालीस
१४३.	सुजा मती सिर सबद रो	.	"
१४४.	चढा कसौटी पर मती		"
१४५.	घड़ो, कूंजीयो, माटकी	.	गुनचास
१४६.	जाबक काचा सूत जद	.	"
१४७.	दादल छंटग्या पण कठै	..	"
१४८.	छोटी पोटी सबद रो		पचास
१४९.	अतर तप लाग्यां विन्यां	. .	"
१५०.	माली गौरो चनरमा		"
१५१.	खिण खिण में घट बढ हुवै	.	इकावन
१५२.	बूहो बड़ रै बीज ज्यूं	.	"
१५३.	व्याल सहस फण दापड़ो	.	"
१५४.	बीज अदेवल खा सकै	. .	बावन

मोती

सोपी

१५५.	मसि गारो भाठा सबद	वावन
१५६	बीज एक है पण उग्या	"
१५७.	घाव दियो बैरी करै	तरेपन
१५८	पड़्यो कुभ रै गुण गल	"
१५९.	बिन्यां बीज निपजै इस्या	"
१६०	दिन किण नै गोरो करै	चौपन
१६१.	जका अजोगा मिनख बै	"
१६२.	जियां भिदयां अणु रै हुवै	"
१६३.	सोधै सिस्टी मूल नै	पचपन
१६४.	करम बंध्या कद जीव रै	"
१६५.	सिस्टी नै बिंबित करै	"
१६६.	आडी रसना रै करी	छप्पन
१६७.	काढ फूल रै जीव नै	"
१६८	बड काजल री कोटडी	"
१६९.	सबद अबै कर दै खमा	सतावन
१७०	उच्छव रै रमझोल मे	"
१७१.	छयां न इच्छै रूख पण	"
१७२.	मिलसी जड़ नै अरथ जद	अठावन
१७३	जीव नाव ठाकर बडो	"
१७४	सबद तू तड़ा वो'र क्यूं	"
१७५	रीतो दिवलो सबद रो	गुणसठ
१७६	झूठो साचो के हुवै	"
१७७	जल स्यू धरती नीसरी	"
१७८	संसारी सम्बन्ध है	साठ
१७९.	बाजी सावण डोकरी	"
१८०.	एक एक तिण चुग चिडी	"

१८१.	कच्चाई कोनी मिटी	...	इकसठ
१८२.	झोटा लेव नौद रा	..	"
१८३.	चितण रो गैरो कुओ	...	"
१८४.	निरजण रोही एकली	.	बासठ
१८५.	कर विवेक रो छायालो	.	"
१८६.	नहौं राम रै नांव स्यूं	...	"
१८७.	रावण रै दस सीस हा	...	तेसठ
१८८.	पलक फरुकै पलक में	..	"
१८९.	बड़वानल घघकै समद		"
१९०.	उगै न हीरा कांकरा	..	चौसठ
१९१.	रतन जड़ाया मुगट में	.	"
१९२.	काम भूख रो दीठ स्यूं	.	"
१९३.	मत मोल्योड़ै ग्यान रै	.	पैसठ
१९४.	दूज चांद वरतै जिस्थो		"
१९५.	कियां ल्या'र मूरत घड़ी	.	"
१९६.	पैली भींची किड़किड़ियां	.	छयासठ
१९७.	आंक घटा दै आक नै	..	"
१९८.	कोनी सत रो सबद स्यूं	...	"
१९९.	तू सबदां रो भीड़ कर	.	सड़सठ
२००.	गई महक उठ गगन मे	.	"
२०१.	अगम नहौं भव रो समद	...	"
२०२.	वगत नहौं थारै वलू		अड़सठ
२०३.	लोक लाज स्यूं डर मिनख	.	"
२०४.	तू अनन्त रै वासतै	...	"
२०५.	मत परकरमा कर विरथ	.	गुणनतर
२०६.	आगै लारै चालसी	...	"

मोती	सीपी
२०७. मँ'ल भूँपड़ी है जिस्या	गुणनतर
२०८. जता जीव सँ रा अलग	सत्तर
२०९. रस नँ कर नीरस लगा	"
२१०. छोड़ँ सोरँ साँस कद	"
२११. मन रँ तारँ जीव क्यूँ	इगंतर
२१२. कठँ कठँ कोनी गयो	"
२१३. एक बुझाई सिलगगी	"
२१४. मूढ़ किस्या दरसन हुवँ	बहतर
२१५. वधण मोटो राग रो	"
२१६. जावक मुरड़ी निसरगो	"
२१७. घाणी रो नारो वण्घो	तिहतर
२१८. उठा दीठ देखूँ जठँ	"
२१९. सहज उगँ वणज्या फसल	"
२२०. सिम्घ्या जका बिछावणां	चौहतर
२२१. परम पुरुष सवंग्य श्री	"
२२२. डूंगर माघँ हिम चढघो	"
२२३. घटँ नहीं कोई अघट	पिचेतर
२२४. करड़ावण कोनी सवँ	"
२२५. राम करघो संसँ दियो	"
२२६. हलू स्यू फाड़ँ कालजो	छिन्तर
२२७. करँ च्यानणो लाय पण	"
२२८. तू जोड़घो प्रभु स्यूँ हियो	"
२२९. मोड़ो आवँ रोज तू	संततर
२३०. काँधँ कामल जेठ मे	"
२३१. नांव जपण रँ वासतँ	"
२३२. फूक दियां दिवलो बुझघो	अठंतर

मोती

सीपी

२३३.	उडं पंखेरु मोकला	अठंतर
२३४.	मोती मिणसी बो हुवै	...	"
२३५.	देती मत फिर ओलमो	..	उन्यासी
२३६.	खेल मती लुकमीचणी	...	"
२३७.	बोव्यो जका न ग्यान नै	...	"
२३८.	रवै फूल मे पाखड़्याँ	...	अस्सी
२३९.	माया मिनखां स्थूं बड़ी	.	"
२४०.	गांव भलो समझै तनै	...	"
२४१.	घाव एक सा पण फरक	...	इक्यासी
२४२.	मती कल्पना कर करी	. . .	"
२४३.	म्हे ढोवां पण कद कवै	..	"
२४४.	संख, सीपट्यां दै वगा	..	बयांसी
२४५.	के लेणो के बेचणो	. .	"
२४६.	लेता सौदो हर जठै	. .	"
२४७.	आ'र पड़्यो माथं वजर	.	तयासी
२४८.	तुलता मोती ताकड़्यां	.	"
२४९.	सिस्टी स्पूं दिस्टी बड़ी	..	"
२५०.	फिरै पीवणां स्यापड़ा	.	चौरासी
२५१.	घरम आचरण स्पूं सधं	..	"
२५२.	समघरमी है हिम-अगन	...	"
२५३.	गगन एक कोनी, अलग	.	पिचासी
२५४.	चांदी स्पूं चंदो घड़्यो	.	"
२५५.	सुई नहीं कौं काम री	. .	"
२५६.	बंघसी बो ही आंक मे	.	द्वियासी
२५७.	मोटी छांटां ओसरयो	...	"
२५८.	खोटी मत चिन्ती हुवै	...	"

भोती

सीपी

२५६.	सींची नीर सनैव रो		सत्तासी
२६०.	तू मंगती दरपण कपण
२६१.	दरपण नै अरपण हुवै
२६२.	रुत जातां भेला करचा		इठ्यासी
२६३.	कलम हुई आगें पछै		..
२६४.	अणभव द्यो आवै जको	.	..
२६५.	लोक घरम आत्म घरम	.	निवासी
२६६.	जलम मरण रै जालू स्यूं	.	..
२६७.	फिरै भीड़ मे सोधतो	.	..
२६८.	तू चाल्यो पग मांड कर	.	नव्वं
२६९.	छोलै डील खराद पर		..
२७०.	मकड़ी ज्यूं जालो गुथै		..
२७१.	रामघणख रो सतलडो	..	इक्यानवै
२७२.	अंध वासना उरवशी	.	..
२७३.	सूरज रै तप बल चढ्यो		..
२७४.	नैण कोटडी मे बसै		बाणवै
२७५.	सहस्र धार अमरित झरै		..
२७६.	घुमा चकरियो वेग स्यूं
२७७.	वगत वगत री वात है		तेणवै
२७८.	सावल सबडी राबडी		..
२७९.	यारै घर रै आंगण		..
२८०.	दीठ नहीं तो सबद है		चोणवै
२८१.	ऊवो जठै अगूण है	.	..
२८२.	गोंठ खुल्यो लांबी हुवै		..
२८३.	गाव जठै गेला बठै	.	पिच्याणवै
२८४.	अगन घघकतो न्यावडो		..

मोती

सीपी

२८५.	जीवण कद निज में मजल	...	पिचयाणवै
२८६.	छात गगन भू आंगणो	...	छिनवै
२८७.	धुकसी लकड़ी एकली	...	"
२८८.	तप अंधेरै मे दियो	..	"
२८९.	विनां पात्र जोगो हुयां	...	सितयाणवै
२९०.	चावै करणी साधना	..	"
२९१.	चिणगारी कोनी सकं	..	"
२९२.	कोनी कीं पल्ल पड़	..	इठयाणवै
२९३.	ध्यान ध्याण रो मंत्र है	...	"
२९४.	पुरषारथ बो ही करम	...	"
२९५.	गोरख धंधो समझ जे	..	निनाणवै
२९६.	मोह मुगत मनडो हुवै	...	"
२९७.	वजर मान नारेल रै	...	"
२९८.	निन्दा सुण ज्यावै चिगर	..	सौ
२९९.	पोथा ढोयां ग्यान रा	..	"
३००.	मत इनरथां नै रोस तू	...	"
३०१.	भाव भूप री पालकी	...	एक सौ एक
३०२.	डाल पान मे उलझ मत	...	"
३०३.	मन री बांबी में पड़्या	...	"
३०४.	तप करसी भेली हुसी	...	एक सौ दो
३०५.	समद मय्यो जद नीसरयो	.	"
३०६.	जावक काला कोयला	...	"
३०७.	नान्हो सौ कोड़ी भरै	...	एक सौ तीन
३०८.	छोड कोनी ठोड पण	...	"
३०९.	आसी परणन नै तनै	...	"
३१०.	राम नहीं रावण नहीं	...	एक सौ चार

मोती

सीपी

३११.	जाबक नान्ही कांकरी	.	एक सौ चार
३१२.	बडा हुवें वां नै नहीं	.	"
३१३.	अपग हुवें सत कद मंडे	.	एक सौ पाच
३१४.	करै नहीं ज्यूं रूप नै		"
३१५.	मुगती रो गेलो नहीं		"
३१६.	बाथ घाल ली सबद रै		एक सौ छह
३१७.	चावें देणी साच पर		"
२१८.	ममता नै समता बणा		"
३१९.	घणो गहन आतम धरम	.	एक सौ सात
३२०.	हेला मारै मजल नै	.	"
३२१.	मुगती इच्छे जीव जे		"
३२२.	ममता त्यागें पण हुवें		एक सौ आठ
३२३.	हुवें न जिण रै हेत में	.	"
३२४.	नहीं तूतड़ें मे घलें	..	"
३२५.	जुड़ें नहो ज्यूं रुंख स्यू		एक सौ नौ
३२६.	हेम कांचली तावड़ी	.	"
३२७.	आड़ावल माथें मुगट		"
३२८.	माथें अंम्बर मोलिये	.	एक सौ दस
३२९.	रवें कुअं रै मांय नै	.	"
३३०.	रात डावड़ी बगत री	.	"
३३१.	देस नहीं मरुदेस सो	..	एक सौ ग्यारह
	पांच महाव्रत	...	
	अहिंसा		एक सौ पंद्रह
	सत्य	..	एक सौ सोलह
	अपरिग्रह		एक सौ सतर
	अस्तेय	..	एक सौ अठार
	ब्रह्मचर्य	.	एक सौ उगनीस

१

हुवै न सत् री परंपरा
सत अंतस रो वोध,
पीढी चालँ असत री
तत नै समझ अबोध !

२

रयो हुवै निज रो घणो
क्यां नै परण्यो पीव ?
नींद बेच क्यूँ ओभको
लीन्यो भोला जीव ?

३

भेख घरघां टोलँ रत्न्यां
नाक घलैली नाथ,
चावै जै साटयात तो
वण कर रही अनाथ,

४

दीठ हुयां सत भाससी
निरयक भेख डफाण,
आंघं न कोनी दिसं
घरघो हथेली भाण !

५

नहीं भेख में दीठ मे
संतपणं रो बासं,
बिन्यां हुयां समदीठ सो
कात्यो पिन्यो कपास !

६

थित गत रो समतोल है
ओ दिखतो संसार,
हूंतं पाण अतोल के
खिंडतां लागै बार ?

७

मोटो समझै आप नै
जे तू धन रे पाण ।
थारो चेतण वापडो
जड़ता लार पिछाण,

८

घड़ी समझ जिण नै कसी
पू चै पर मोट्यार,
सजड़ हथकड़ी काल री
कंदौ बण्यो लगा' र ।

९

कुदरत पालै बीज नै
फल रो चोटे खोल,
मिनख खोल नै मोल लै
फैकै तत अनमोल,

१०

सवद चलू कोनी सकै
असवद समद अलूंच,
कागद रो घट भर थकी
कलम चिड़ी री चूंच,

११

स्याही, कागद, कलम जड़
आखर है निष्प्राण,
सवद जलमसी जद हुसी
संवेदनमय प्राण,

१२

जकी चेतणां जीव मे
वीं री कोनी आद,
मुगत हूँर परमाद स्थूँ
कर अणभूत अनाद,

१३

पड़सी पाछो खेत मे
ज्यासी किस्थो पिसीज ?
सकै जाण इण लिखत न
न करसो न बीज ।

१४

काल् मालां री रयण
दिन रा धवला केस,
जद घर आवै कामणी
धणी जाय परदेस ।

१५

सूरज कद आथै उगं
न्यारी न्यारी ठौड ?
ओ तो मन रो देत हूं
कियां नैण दै छोड !

१६

बरस्थो धारोधार पण
लियो वेकलू चोस,
ओला भांज्या ठोकरां
जद जल हूयो सदोष,

१७

काल नहीं टूटै जकी
टूटै बा है दीठ,
काला धोला रात दिन
नैण विहग रो बीठ,

१८

तिरवालो घी तैल रो
दोन्युं एक समान,
नहीं आंख पण नाक स्थूँ
बां रो हुव निदान,

१६

जका सूर रै बंस रा
सकसी भेल उजास,
चमचेड़ा ऊंदी लटक
तम में करसी वास,

२०

जाऊ जाऊ मन करै
जाणो अजल धीन,
जास्थू जिण खिण अणखसी
जामण मनै जमीन,

२१

चिणियो आगल नाँव पर
ओ दस खडो मै'ल,
सूतो तू क्यू जीवडा
मांय हुयोड़ो पैल ?

२२

खुली छोड़ मत आंख न
हलती फिरसी दीठ,
जड़ तू पलक किवाड़िया
सुरत बावड़ी नीठ,

२३

रमै रमतिया साँस री
पण अणदीठी डोर,
रमत खिंडे जद ठा पड़े
रमतो कोई और !

२४

सुख दुख करमां लार है
मन निरवालो राख,
रसना स्यूं गुड़ लूण नै
समभावी वण चाख,

२५

घाट घाट भमतो फिरचो
रीतो घड़लो लें'र,
थाक्यो जद निज बावड़ी
चेतै आई फेर,

२६

राखी मन री म्यान मे
तिसणा री तरवार,
जे कर दी नागी बड़
बावणियै नै मार,

२७

खिरं जकं मे ही रवं
बो है जको असेस,
किरिया ह्रुवै विसेस पण
कारण है अविसेस,

२८

जड़ चेतण री उमर वण
हूण लागज्या लार,
काल वापड़ो के करै
बिना उमर गिगनार !

२९

तन नै मोड़ो कर ठगी
तू मत निज नै जीव,
मन मोड़ो कर खोलसी
ढकियो मोड़ो पीव,

३०

संत सबद सिव नैण है
छट दाभ दै काम,
घणख वाय रै रोग री
औखघ तातो डाम,

३१

सुवरण सुवरण ही रवे
नहीं कटीजै अग,
खोट हुवे जिण दरव मे
रंग हुसी बदरंग,

३२

अणु स्थू करै कुचेरणी
मन मे वण करतार,
लागं आयो भायखो
लोप हुसी सझार,

३३

जीव पावणो तू अठै
क्या रो करै धिणाप ?
मारग री खरची हुसी
थारा ही पुन पाप,

३४

कलम तीर मन दावरी
सबद हिरण रै लार,
भाजै बिल स्थूं निकलसी
काल सरप फुंकार,

३५

तू भोला वन में गयो
घर में मन नै मे'ल,
वन वणग्यो घर जीवड़ा
जबर करी असकेल !

३६

निरथक पूजा सेवना
काई फूंकै संख ?
खिण खिण मन रै गगन मे
उडै वासना खंख,

३७

चावें हूणो भय भुगत
मत फिर हूजां लार,
जा तू थारी सरण मे
असरण ओ संसार,

३८

आम नीम नेडा उग्या
निज निज रा गुण दोष,
आल नहीं देवै इस्यो
मिलै कठै पाडोस ?

३९

गगन थाल पुरस्यो समद
वादल खोच सिझा'र,
भाण घिलोड़ी पून दी
उघा भरै घी धार,

४०

दिन रो धोलो हांसलो
कोयल काली रात
गगन पीजरो काल ले
फिरै न आवै हाथ !

४१

बंघचो भोला बगत स्थूं
सघसी कियां अकाल ?
चाकर नै ठाकर करघो
इण रा हेला भाल,

४२

गगन पून घर मे वसै
नित उठ आवै भाण,
लूठां लारै क्यूं फिरै
फेर हुचोड़ो दाण ?

४३

तू जाण्यो पण कद करी
वो थारै स्यू जाण ?
दोन्यां कानी स्यूं हुवै
वीं रो नांव पिछाण,

४४

लियो नहीं जावै मतै
आवै वो सन्यास,
ओ तो मन रो भाव ज्यू
घडै मांय आकास,

४५

फिरै भाखतो परवचन
सुणै न निज रा कान,
भाखै जिण नै आचरै
वीं रा वचन प्रमाण,

४६

कर निनाण तिसणा नसै
हुवै साव निरबीज,
जणां रुंख संतोस रो
फल देसी गदरीज,

४७

नहीं सवद बोलै भंवूं
गूंगै भवूं न बोल,
नैण नहीं बीं रै भंवूं
के हीरो अनमोल !

४८

कोजो कादो राग रो
पग पग तिसलै जीव,
छाई नाख अराग रो
मिलसी सूदया सौंव,

४६

जद जद में मांदो हुयो
करयो सबद नै चीत,
हणवत वण संजीवणी
ल्यायो पाली प्रीत,

५०

उमर ढली अणचेत मे
बुझी नैण री दीठ,
पण ली जागी सबद री,
दिखग्यो मन अदीठ,

५१

समद सूख सूरज बुझ
डिगं हिमालो धूज,
परल पंली पून थम
मरसी जीव अमूक्ष,

५२

सबद सूर कायर सबद
सबद मूढ, मतिमान,
सबद भेद अभेद है
सबद भगत भगवान,

५३

सबद बांध दै जीव नै
सबद खोल दै फन्द,
विष अमरित साधै जियां
सबद इस्यो है छंद,

५४

नित घोचो करतो रबूं
पर है सबद उदार,
निज रै मायै पर धरै
म्हारो भार उतार,

५५

काल कनोई, गगन रो
भट्टी, ईंधण भाण,
रात कडाही मे तल
तारां रा पकवान,

५६

बूंद समद रो भावडी
बाप बडो गिगनार,
सुसरो हिमगिरि घण घरा
नदचा दायजो लार,

५७

मन करसो, हल जीमडी
खेत कान उणियार,
खारा मोठा फल हुवै
वचन बीज रै लार,

५८

वोणै पैलो दीठ कर
वोज कोरडू टाल,
पछै रेत री कूख नै
देतो फिरसी आल,

५९

जको निरजण कद करै
सिरजण री वेगार ?
सिरजण करसी वो हुवै
जिण नै कीं दरकार ?

६०

रच्या न सुख दुख वो जको
प्रभु सत चित आनन्द,
जता दुंद वै जीव रै
निज करमां रा फन्द,

६१

काला घोला बादला
ढकै जिया गिगनार,
बंघै इयां पुन पाप स्यूं
आतम तत अविकार,

६२

अकथ साच नै कथ सकै
रला सवद री भूठ,
वाईजै तरवार कद
बिन्या लगाया मूठ ?

६३

रतन साथ ले ज्याण नै
भेल्या बुगची वाघ,
ओ ही समज्या तो घणो
कयो देणिया काघ,

६४

नहीं सकै दिवलो भुला
तम थारो उपगार,
थारै कारण नेह दै
मतलबियो संसार,

६५

कद इच्छियो तू जलम नै
इच्छै कद तू मौत ?
तू परबस गलवाद कर
मत कर छोड़ै पोत,

६६

फिरै फिरकली जद हुवै
चिमठी मे कीं साच,
झूठ नहीं गत दे सकै,
लै तू परतख जांच,

६७

वास हुवै डीघा घणां
पण थोथा के सार ?
तुलसी हुवै बिलाग री
मादा रो उपचार,

६८

काम हुवै थारं करयो
ओ है कूड़ विचार,
कता अलख सागै जुड़ै
जणा पड़ै बो पार,

६९

आघो घुंऊ विकार रो
दीठ ज्यायली चूक,
चेता बुझती चेतणा
दं विवेक री फूंक,

७०

देस, काल न देख पण
आ लै निसचै जाण,
सत रै मारग जा सकै
नहीं असत रै पाण,

७१

बैठो काल बिसायती
जीव रमतिया ले'र,
पेई मे धरती पड़्यां
सिङ्ग्या, ढ़कणो दे'र,

७२

काल व्याघ तंबू गगन
गाड्या धरती खूंट,
कुतिया दो दिन रात रा
जीव सकै कद छूट ?

७३

काज बीज चातर चुगै
दै कचरै नै टाल,
हिचकै काढण वासतै
मूढ बाल री खाल,

७४

आघी आई जद गया
रावलि़या रलकीज,
विपद पड़्या रहणी कठण
भेलप, धीज पतीज,

७५

जको रवै निज भाव मे
वो ही सहज समाव,
थित प्रग नर जाणै नहीं
काई हुवै अभाव ?

७६

कालबेलियं बगत री
पूंगी सो ओ भाण,
निकलुं अंबर विवर स्थूं
तम फणघर सुण तान,

७७

गुण गिणती में आ सकै
औगण गिण्या न जाय,
कुण तिराक खारो समद
तिरणै सकै वताय ?

७८

फुलड़ा आक गुलाब रा
मोमाखी रस ले'र,
मधु सिरजै तू रच बिंया
रचना निज पुट दे'र,

७६

पोथ्यां पढ़ पण तू मती
लेई अकल उधार,
पुसट करी बों खाद स्यूं
निज रा बीज-विचार,

८०

रचना वा जिण मे दिखै
सिरजणियँ री दीठ,
नहीं'स बोझो सबद रो
लद मत कागद पीठ,

८१

पगां पड़ गेला ह्रुव
जे मजिल रो ग्यान,
नहीं'स मारग बापड़ा
सूरदास रा बाण,

८२

मजल बता पैली मनै
जद देखूं मैं दीठ,
मजल नहीं कोई जणां
तू अवधूत वसीठ,

८३

आलू बैठी चिड़कली
दीठ गई गिननार,
निरविकार दीख्यो जणां
उडगी पांख पसार,

८४

नभ माचो दिन तोड़ियो
कामल काली रात,
सोण रो मिस कर करै
काल जीव री घात,

૮૫

દીઠ પાંગલી જા પરી
જઠં દિલેં મલ્લ-મોગ,
વળસી યિર આ અચપલી
જે મન સાધેં જોગ,

૮૬

લ્યાયો લાડી મન મરદ
નલ્લરાલી વુઘ નાર,
જાયા સુલ્લ દુલ્લ સુત્ત ઇલ્પા
નિત્ત રી ગોઘમ ત્યાર,

૮૭

માણ તિલગતી થેપડી
લિડગી વુજ્જતી વાર,
રાલ્લ રાત્ત ઝપર પડ્ધા
નલ્લત્ત સજલ અગાર,

८८

भाण मिरकली घीव सो
दिन आटे री खीर,
भरचो गगन रो वाटको
काल निवेडै पो'र,

८९

पग घरती, सूंडी अनल
नाक पून, चख नीर,
मन अम्बर, तत पांच री
टपरी नांव सरीर,

९०

सत अरजण रो विसरजण
मा रे दूध समान,
दान नही वो विष वमन
अरजित कुकरम पाण,

६१

बैठी बाई साच है
कीड़ी रो सी चाल,
झूठ ऊठ सा डग भरै
पूगण मे के ताल ?

६२

ससतर वणग्या सासतर
सवद दुद रो बीज,
जड स्थूं बंधगी चेतणा
मिनख गयो भरमीज,

६३

सूरज कद आंथै उगै
भरमीज्योड़ा नैण,
इकलंग तापै गगन मे
बी रो छाया रैण,

६४

मन राजा इनरघां प्रजा
राखै घणी घिणाप
घणी सतायां बापड़्यां
देसी उत्तर घाप,

६५

लफ भर बोई बीज मत
सागै एकण ठौड़,
बा भेलप के काम री
जुड़ ज्या जिण स्यूं गोड ?

६६

चिणगारी सोनै जिसी
अगन-पुरष रो बीज,
परस ह्रयो बाती गई
भोलै मे गरमीज,

६७

सांस जठे पूगै बठे
मते पुसव री गंध,
के हूतो हूँती इयां
सूल चुभन निरवन्ध ?

६८

वधण कंवल फूल रो
सवे न बीं री गंध,
इच्छया आ हर जीव री
रह सदा निरवन्ध,

६९

अणसमतो मत तेवड़ी
सामी समतो काम,
दिवलो राखी रात नै
नान्ही लौ पर थाम,

१००

अणगिण रै नेड़ो गयो
में गिणती रै पाण,
अत मिलायो अणत स्यूं
गिणती रो अंसाण,

१०१

विपद पड़्यां सागै रवै
इस्या कठै है सैण ?
सिझ्यां पड़ता मींचसी
पंथी मारग नैण,

१०२

आंख अंधेरै स्यूं मिला
मत सूरज नै देख,
नागै सत रै तेज नै
सहणो कठण चनेक,

१०३

हर सिरजण रं मूल मे
बैठी मोटी पोड़,
गीत वणै जद कालजै
मोटी उठै हवीड़,

१०४

दीसै देतो हाय स्यूं
लेतो कोई हाय,
किण रा देणा पावणा
आ जाणै जगनाथ ?

१०५

जतै भागसी राम री
दीठ कनक अग तार,
रावण हरसी जानकी
लाघ लिछिमणी कार,

१०६

कोड़ी कण, मण रो करै
हाथी आप जुगाड़,
मंगतो वण मोटा मिनख
मती माजनो पाड,

१०७

इछै कोनी कीं जको
दान भूलज्या दे'र,
इस्यै मिनख रै सामनै
मंगतो साव कुवेर,

१०८

हीरां रा खाजा करघा
गज मोत्यां री खीर,
सूखो टुकड़ो चांवतो
भूखो गयो फकीर,

१०६

फिर मांगतो भूंगड़ा
ओढ्यां रेसम शाल,
समझी तू अवधूत वो
बोली वचन संभाल,

११०

दीवट पर दिवलो चसै
वारै गयो उजास,
इयां सुजस, सोरम, कुजस
घर मे करै न वास,

१११

मोसै मिणियो साव रो
पोवै साव अलूण,
कीड़ीनगरै नै जका
पालै लेज्या चून,

११२

माटी मा नारायणी
माटी बिरम महेश,
माटी रिघ सिघ गोरजा
माटी देव गणेश,

११३

जलमै शतपद कंसलो
हाथी रै पग च्यार,
सरप अपग संसार री
लीला री के पार?

११४

अमी सरीसी मस्ति सरस
कलम मती नस नाख,
असबद नेड़ो सबद री
जोत जीवती राख,

११५

गावै जिण रै गीत नै
अणपढ कंठां धार,
कालजयी बो कलम स्यूं
दियो काल नै मार,

११६

हूँता खोड़ा हिरणियां
सुणतां पाण दकाल,
वा रो मिणियो मोसग्यो
दिन दोपारां काल,

११७

नींद मुंद्यै नैणां दिखै
ज्यूं मन रा जंजाल,
भासै अतर दीठ नै
भव रा तीन्यू काल,

११८

खिण रै तारै खिण गई
खिण आगै खिण फेर,
गई जकी नै भूलज्या
आवै जकी अंवेर,

११९

नैण मुंडागै पंथ बो
चाल्यां लखसी पीठ,
दीठ पीठ दोन्हुं दिह्यां
मिलसी मन रो ईठ,

१२०

कर लै छीणी नै कलम
उन्डा सबद उकरे,
निमलो लिखत भुजाणसी
काल आंगली फेर,

१२१

एक बेजको जे हुवं
कपड़ो वार्ज पुर,
पण भाभं रा छेकला
वण्या चनरमा सूर,

१२२

पूग गाँव रं गोरव
गेलो देई छोड,
बीं गेलं वगतो रया
कोनी पूगं ठोड,

१२३

पणिहारी, पाणी, घडो
मिलग्यो सगलो मेल,
फक्त इंडुणी रं बिन्या
खिडियो मंडियो खेल,

१२४

मुगता चुगतां हंस नै
किण दिन देख्यो दीठ ?
विरय तरक, कंवत हुवं
निज मे आप अदीठ,

१२५

पोल ढकीजें बाबला
कद ढकियां स्थूं पोल ?
नहीं खोलसी पोल जे
खुलसी थारी पोल,

१२६

कता दरब के गुण घरम
मन री जाण पिछ्छाण,
पुतली रै परदे परां
कांटां फूल समान,

१२७

इनछ्या री मछली चपल
गुदलावं मन नीर,
देख दापलं दीठ रो
बुगलो बंठयो तीर,

१२८

तणो मून है रूख रो
पण पत्ता वाचाल,
भाज्या पड़ पतझड निरख
लागी कती'क ताल ?

१२९

गिण मत उण रा गासिया
जिण नै ल्याचो नूत,
आडं हाया पुरस जे
चावं थारी कूत,

१३०

दौरी विरती छूटणी
बदल सकै है रूप,
तिरचो कनक रो समद पण
पड़चो सबद रै कूप,

१३१

दुरगम मोटै भाखरां
बसै एकलो ना'र,
रवै एक बिल अंदरा
डरता टोल वणा'र,

१३२ -

भाण कनं कुण जा सकै
घघकं अगन अपार,
लियाँ हथेली सांपड़त
सत रै बल गिगनार,

१३३

फल इसडा जिण नै चखै
कदेन वां रा बीज !
अनासगत वण तू इस्थो
परतख देख पतीज,

१३४

दीठ थकी वा समझी
निरथक जाण पिछाण,
पण तिसणां कद लेण दै
पलका नै ओसाण ?

१३५

लिह्या न सें खाता बही
करचा न बाकी जोड,
चाल्योडो गेलो कलम
म्हारी चाली छोड,

१३६

उड्यो वायर साथ तिण
सागो समझ अबूझ,
पड़्यो अगन में पून नै
लेतो पैली बूझ,

१३७

गैरो जा चावै हुवै
पींदै स्थू साह्यात,
निज मे देसी जल धुआ
कादै भरिया हाथ,

१३८

फिरा आंगली परख तू
किसी'क तीखी धार ?
हुवै सुहागण रगत रै
छांटों स्थू तरवार,

१३६

देख काच मे मोलियो
बाघ पैच सुंवार,
टीकण आई खिण गई
हूती देल उवार,

१४०

दीठ गई पण नंण रो
खोखो साबत हाल,
उड्यो पंखेरु पण रयो
आली तरवर डाल,

१४१

मोटा घणा मतीरिया
जावक माडी बेल,
चिप जामण रूचू बापडी
सकी कूख नं भेल,

१४२

हर कोई नै पुरस मत
मती करी मनवार,
अपच हुया वणसी गरल
अमरित गरिठ विचार,

१४३

सुजा मती सिर सबद रो
जता अणूतो लाड,
चेतण ओ वणज्या नहीं
चेत गर्ल रो हाड,

१४४

चढा कसौटी पर मती
ज्यासी सुवरण छीज,
इंयां अंतस्याणो क्रपण
गाहक गयो ठगीज,

१४५

घड़ो, कूंजीयो, माटकी
माटी रा आकार,
दीसै उंडी दीठ नै
माटी आप कुमार,

१४६

जावक काचा सूत जद
सागै गया वटोज,
मारकणो गोघो गयो
वा स्यूं ही नाथीज,

१४७

वादल छंटग्या पण कठै
जावै ओ गिगनार ?
कीं कोनी वीं रो सकै
कुण सावट विसतार ?

१४८

छोटी पोटी सबद री
किया समावै साच ?
दीसै रूप, अरूप नै
दिखा सकै कद काच ?

१४९

अंतर तप लाग्यां बिन्यां
काचो भांडो ग्यान,
चिनीक तिसणा कांकरी
देवै खिडा मंडाण,

१५०

माली गोरो चनरमा
सौंची बाड़ी रात,
नखत पुसव कुचल्या खुरां
बड़ गोधो परमात,

१५१

खिण खिण मे घट वद हुवै
वदलै भाव विचार,
कीड़ी सो खिण स्यू वध्यो
भव-गज बली अपार,

१५२

दूहो वड़ रै बीज ज्यूं
राई रै आकार,
बोवै अतर दीठ मे
उग पूगै गिगनार,

१५३

व्याल सहसफण बापडो
नारायण री सेज,
काल डसै जिण मे हुवै
रस इनरघा रा बेज,

१५४

बीज अदेवल खा सकै
उग्यां जिनावर लार,
मन स्युं कर सा कल्पना
मत पुरषारथ हार,

१५५

मसि गारो भाठा सबद
कागद घरती मान,
उठा कलम-करणी चिण्यो
कविता रो अस्थान,

१५६

बीज एक है पण उग्या
ज्यासी पड़ फंटवाड़,
आ चिता कर बीज रो
मत तू भविस बिगाड़,

१५७

घाव दियो वेंरी करै
पाछो वगत भराव,
कवै वगत नै निरदई
नुगरो मिनख सभाव,

१५८

पड़्यो कुभ रै गुण गर्ल
जणा पतीजी भूण,
ग्यान-नीर ल्या कर सकै
तिरपत जीवा-जूण,

१५९

बिन्या बीज निपजै इस्या
केई हँ फल फूल,
गरभ वास स्यू टाल दै
वा नै अमरित मूल,

१६०

दिन किण नै गोरो करे
किण नै कालो रात ?
घोला काला करम है
जका मिनख रै हाथ,

१६१

जका अजोगा मिनख बै
दै हूणी नै आल,
निज रै अकरम वासतै
आ ही लाखै ढाल,

१६२

जियां भिदयां अणु रै हुवें
वारै घोर निनाद,
बियां चेतणा भिद जगै
अंतर अनहद नाद,

१६३

सोघं सिस्टी मूल नै
जको साव निरमूल,
कोनी लाघं बीज तू
कांदो छोल समूल !

१६४

करम वंध्या कद जीव रै
तरक उठावै वात,
सहज पडूतर कनक रै
जद स्थूँ माटी साय,

१६५

सिस्टी नै बिबित करै
मन रो काच विचार,
निरविचार जे मन हुवै
भासै कद ससार ?

१६६

आडी रसना रैं करी
दांत होठ री पाल,
जे उलांघ वारै हुवै
बोली वचन संभाल,

१६७

काढ फूल रैं जीव नै
अंतर दीन्यो नाम,
अंतरजामी कद खमै
देखै आठों याम ?

१६८

वड़ काजल री कोटड़ी
रयो जको अणदाग,
नर देही मे सांपड़त
जलम्यो आप विराग,

१६६

सबद अन्न कर दं खिमा
जा तू थारी ठौर,
थारै अणहद हेत स्यू
मैं पीडीजूं ओर,

१७०

उच्छव रं रमभोलु मे
दूट्यो मुगता हार,
मुगत हूर नाची मिण्यां
सुबै राजदरवार,

१७१

छयां न इन्द्रै रुख पण
सूरज रो संजोग,
इया बंध्यो सुम करम रं
तारै पुन रो जोग,

१७२

मिलसी जड़ नै अरथ जद
जुड़सी चेतण सांस,
वण्थो किसन री वंसरी
निरथक थोथो वांस,

१७३

जीव नांव ठाकर बडो
देह दुरग में वास,
चाकर पांच हलैड़मन
मरजीदान खवास,

१७४

सबद तूंतड़ा बो'र क्यूं
रुंघं कागद खेत ?
अं जावक निरजीव है
आं नै गिटसी रेत,

१७५

रीतो दिवलो सबद रो
नहीं भाव रो नेह,
बिन्यां दीठ-तूली कियां
जगमग करसी गेह ?

१७६

झूठो साचो के हुवं
धरम धरम है मूढ,
नहीं विसेसण सुणन मे
आयो साची झूठ,

१७७

जल स्यूं धरती नीसरी
अनल परगटघो नीर,
नारायण रो सासरो
जल लिछमी रो पो'र,

१७८

संसारो समदन्व है
भीषां पून समान,
बणै किराणो केवट्यां
नहीं'स कचरै मान,

१७९

वाजी सावण डोकरी
किर्या जलमतां पाण ?
खिण मे बचपन जोवनो
जरा भोग ली लाण,

१८०

एक एक तिण चुग चिड़ी
लीन्वो आलो घाल,
वा छोटी पण नित बड़ी
लागी कती'क ताल ?

१८१

कच्चाई कोनी मिटी
मत कर घड़ा गुमान,
किसी ठेस के ठा करै
तनै ठीकरै मान ?

१८२

झोटा लेवै नौद रा
थोड़ी ताल बिलो'र,
काढ्यो चावै चूंटियो
दै झोटा संजोर !

१८३

चितण रो गैरो कुओ
लियो अलूच कवीर,
'सतवाणी' स्यू खोल दी
फेर रुझोडी सोर,

१८४

निरजण रोही एकली
बैठी गई अमूंभ,
करी कमेड़ी गटर गूं
आभं पूगी गूंज,

१८५

कर विवेक रो छायाली
मन रा फटक विचार,
उड़सी निरथक तूंतड़ा
रहसी दाणां लार,

१८६

नहीं राम रै नाव स्यूं
कम रावण रो नांव,
रामपुरा केई नहीं
पण रावणपुर गांव,

१८७

रावण रं दस सीस हा
आ कोरी गलवाद,
कुबधी रो परयाय वण
गयो लोक परवाद,

१८८

पलक फरुकं पलक मे
के ठा कती'क वार?
मूगी सांसां कुण गिणं
गिणं टका ससार,

१८९

वड़वानल धधकं समद
दावानल कातार,
रागानल सिलगं वलं
ओ आखो संसार,

१६०

उगै न हीरा कांकरा
उगसी बो ही बीज,
लख माटी री पीड़ नै
ज्यासी जको पसीज,

१६१

रतन जड़ाया मुगट मे
चुग चुग घणां अमोल,
जड़ियो लो बुघ-मिण चुरा
चूकी दीठ डफोल,

१६२

काम भूल री दीठ स्थूं
मिनख डांगरो एक,
पण पिसतावै मिनख जद
जागै हियं विवेक,

१६३

मत मोल्योड़ें ग्यान रं
हियो अडाणें राख,
थारी बुध रो मिण ढकं
क्यूं तू गोबर नाख,

१६४

हूज चांद बरतैं जिस्थो
पाटी काली रात,
वारखडी तारा बगत
लिखैं भुजाणें प्रात,

१६५

कियां ल्या'र मूरत घड़ी
इस्थो बजर पाषाण ?
इण रो हियो पसीजसी
कद दुख जग रो जाण ?

१६६

पंली भींची किड़किड़्यां
पछै भींचली जाड़,
में समझ्यो ओ कांकरो
लाग्यो पछै पहाड़,

१६७

आंक घटा दै आंक नै
आंक आंक नै जोड़,
कोनी कीं घट वद हुवै
रंसी आखर ठौड,

१६८

कोनी सत रो सवद स्थूं
समवरमी समबन्ध,
सत रो भासा मून है
जियां फूल रो गंध,

१६६

तू सवदां री भीड़ कर
जग्यां न राखी सेस,
कोरो कागद भाखतो
थारो गूढ सनेस,

२००

गई महक उठ गगन मे
छमक्यो जणां बघार,
करम चीकणां खय हुयां
खुल्यो मुगत रो द्वार,

२०१

अगम नहीं भव रो समद
पण लै पैली जाण,
नाख पोटली दरब री
तिरसी तूँवा पाण,

२०२

बगल नहीं थारै वलू
कर लै नीची नाड़,
बगल फिरचां बण कांकरो
पगां पड़ैलो पा'ड़,

२०३

लोक लाज स्थूं डर मिनख
करै नहीं जे पाप,
पराधीन बै बापड़ा
ज्यूं कील्योड़ा स्याप,

२०४

तू अनन्त रैं वासतं
भोलया जाप करोड़,
अणगिण स्थूं मिलणो हुवै
मिणियां गिणना छोड,

२०५

मत परकरमा कर विरथ
बंठो रह इण ठौड,
दीठ राख मिलसी तन
वो कोनी रूंतोड़ !

२०६

आगै लारं चालसी
पग दोन्चू ओ नेम,
करघां ईसको गत कठै
फेर कुसल के खेम ?

२०७

मै'ल झूंपड़ी है जित्या
विस्चो सहज वनवास,
देह नहीं पर दीठ मे
थित प्रग करै निवास,

२०८

जता जीव सै रा अलग
करमां सारु दुंद,
निज री कूंची स्थूं खुलै
अंतर तालो वन्द,

२०९

रस नै कर नीरस लगा
आत्म तप री आंच,
इयां ग्यान गाढो हुयां
बरत पलैला पांच,

२१०

छोडै सोरै सांस कद
लाग्यो तिसणां भूत ?
कर ठुकंतरी सांतरी
काढ ग्यान रो जूत,

२११

मन रं तारं जीव ब्यूं
खांतो फिरं भचीड़ ?
चावं मिलणो साच स्यूं
काढ आंख स्यूं भीड़,

२१२

कठं कठं कोनी गयो
ओ सरभंगी जीव ?
नरग सरग भमतो फिरं
करमा बंध्यो कुजीव,

२१३

एक बुझाई सिलगगी
हूजी तिसणा और,
राख हूत्ती जद वरसती
अनुकपा रा लोर,

२१४

मूढ़ किस्सा दरसण हुवै
फिरयां देवरा धाम ?
दरसण कर निज रा हुवै
ओ मनड़ो निष्काम,

२१५

बंधण मोटो राग रो
ज्यावै गज बल थाक,
तिसणां त्याग्यां ओ भरै
जियां खिरं फल पाक,

२१६

जाबक सुरड़ी निसरगी
दी क्यू सित्या नाख,
चुरा कांकरो दी गमा
हीरां बरगी साख,

२१७

घाणी रो नारो वण्यो
सवद घाल ली नाथ,
मुगत हुसी जद चेतणा
असवद आसी हाथ,

२१८

उठा दीठ देखूं जठं
बठं रतन भंडार,
के छोडूं लेऊं हुई
दोगा चिती लार ?

२१९

सहज उगै वणज्या फसल
तुरत झूठ रा बीज,
उगै न हीरो साच रो
चावै अमरित सौंच,

२२०

सिंभ्या जका विछावणां
दिन उगियां बै पूर,
सरव जिकारा गरज रा
गोगो बाजै धूल,

२२१

परम पुरुष सर्वंग्य श्री
रामचन्द्र भगवंत,
सोधण सीता नै गयो
पण वानर हणवंत,

२२२

डूंगर भाथै हिम चढ्यो
निज नै मान विसेख,
तालामेली लागगी
सूरज सामो देख,

२२३

घटै नहीं कोई अघट
भिड़्या ठोठ स्थूँ ठोठ,
कद खागी एरण हुवै
खायां घण री चोट ?

२२४

करड़ावण कोनी सबै
कनक जको सौ टंच,
जे चाहीजै हार तो
रला मांय परपंच,

२२५

राम करघो संसं दियो
घण नै झूठो आल,
हुई भसम निज मे अगन
सत नै दियो उजाल,

२२६

हलू स्थूँ फाड़ै कालजो
घालै उंडा घाव,
खिमावान धरती मिनख
पण तू नुगरो साव,

२२७

करै च्यानणो लाय पण
डरपै बीं स्थूँ जीव,
लागै गमतो रीत रो
चावै अमरित घीव,

२२८

तू जोड़यो प्रभु स्थूँ हियो
चिनीक रंगी फांक,
पूरो बैठा जोड़ नै
पाछो सावल चांक,

२२६

मोड़ो आवं रोज तू
कंवै मोड़ो खोल,
जाण वूझ मे फेंक दो
चाबी बैठ टंटोल,

२३०

काघं कामल जेठ में
तनै सियालो चीत,
कियां भूलग्यो मरण नै
मनड़ा म्हारा मीत ?

२३१

नाव जपण रै वासतै
क्यूं छोड्यो तू काम ?
जपै जकै श्री राम नै
वो रोप्यो संगराम,

२३२

फूक दियां दिवलो बुझ्यो
वो थारै आधीन,
सूरज कोनी बुझ सकै
जको आप स्वाधीन,

२३३

उडै पंखेरु मोकला
आवै पाछा चाल,
आमै मे कोनी सकै
कोई आला घाल,

२३४

मोती मिणसी वो हुवै
जिण री निरमल दीठ,
सुच्छम दीसै कद तनै
डूगर दीखै नीठ,

२३५

देती मत फिर ओलमो
मत दै झूठी आल,
काई नाब के जमा
निज रो वही संभाल,

२३६

खेल मती लुकमीचणी
निज स्थूँ भोला जीव,
रयो रमत में जीव तो
जासी आयो पोव,

२३७

बोध्यो जका न ग्यान नै
आ हो देसी सीख,
काई करसी दोठ रो
पकड़्या वग तू लीक,

२३८

रवं फूल में पांखड़ियां
पण फल एकमएक,
ज्यूं मंजल रं पंथ मे
डगरचा मिलै अनेक,

२३९

माया मिनखां स्थूँ बड़ी
माया मायड़ तात,
परम पुरष री बीनणी
माया री के बात ?

२४०

गांव भलो समझै तने
बात नहीं कौं खास,
पाड़ोसी चोखो कवं
जणां करी विसवास,

२४१

घाव एक सा पण फरक
कर दे छाती पीठ,
कुण कायर कुण सूरमा
वर्ण कचेड़ी दीठ ?

२४२

मती कल्पना कर करी
तू निरण आगूँछ,
छूटेली कोनी पछै
जिद नाहर री पूछ,

२४३

म्हे ढोवां पग कद कवै
मार्थ पर लो भार ?
निज रै करतब नै कणा
मानै पर-उपगार ?

२४४

संख, सीपट्यां दै बगा
समद न राखै पास,
मोती कोनी काढ दै
पर बो सोरै सास,

२४५

के लेणो के बेचणो
कर लै फड़दी त्यार,
रयो गतागम में पज्यो
ज्यासी उठ बाजार,

२४६

लेता सौदो हर जठै
मेल मूँछ रो माल,
मिलै न कोडी सिर सटै
मिनखां सारु काल

२४७

आ'र पड़्यो माथं वजर
तनै समझ इण जोग,
खरो उतर तू परख मे
सम दिस्टी स्यूं भोग,

२४८

तुलता मोती ताकड़्यां
बोरा हीरा लाल,
बां रै फोड़ा चून रा
मन रो मौजी काल,

२४९

सिस्टी स्यूं दिस्टी बड़ी
घरती स्यूं गिगनार,
हुवै मिनख रो के बडो
बों रो बडो विचार

२५०

फिरं पीवणां स्यापडा
भेख मिनख रो धार,
सूतोड़ां रा सांस पी
भाजै फण फटकार,

२५१

धरम आचरण स्थूँ सघै
ओ कोनी परचार,
जड़ां अदीठी रुंख री
करै माय परसार,

२५२

समधरमी है हिम-अगन
सागी मूल सभाव,
दाक्षं तरवर आकरो
दोन्यां रो ही ताव,

२५३

गगन एक कोनी अलग
हर अणु रो आकास,
दीठे समद अदैत वो
बूदा रो सहवास,

२५४

चादी स्यूं चन्दो घड्यो
सोनं घड़ियो भाण,
हीरा जड़िया नखत ओ
कुण मोटो घनवान ?

२५५

सुई नहीं कीं काम रो
हुवँ नहीं जे बेक्ष,
वड़ं बेक्ष मे गुण करं
बेक्षां नँ अनबेक्ष,

२५६

बंघसी वो ही आंक में
ज्यावै जको गिणीज,
आमो के अंक गया
आंकड़िया अंकीज ?

२५७

मोटी छांटि ओसरघो
कालो वादल गाज,
पिबजी आया चाणचक
हुई हरी मर लाज,

२५८

खोटी मत चिन्ती हुवै
चित्तिणिये री हाण,
मन रै निरमल तिरथ नै
क्यां न करै मुसाण ?

२५६

सींची नीर सनेव रो
मती करीजे चूक,
इंया वंर रो आकड़ो
सहजा ज्यासी सूख,

२६०

तू मगती दरपण ऋपण
कोनी दै कीं काढ,
रीक्ष खीज चावें हुवो
यारा नंण अपाढ,

२६१

दरपण नै श्ररपण हुवें
सज गोरी सिणगार,
पण दरपण री दीठ मे
जागं नहों विकार,

२६२

रुत जातां भेला करघा
करसो कामल बीज,
काती में सामी दिखै
बीं नै आखातीज,

२६३

कलम हुई आगै पछै
लारै हुया विचार,
कलम ठमी आखर गया
आतम रै दरबार,

२६४

अणभव वो आवै जको
वगत पड़्यां पर काम,
कूंची के कोनी मिलै
जद चाहीजै दाम ?

२६५

लोक धरम आतम धरम
अं दोन्धूँ छत्तीस,
सावल मारग समझलें
किस्थो बीस उगणीस ? .

२६६

जलम मरण रं जालः स्थूँ
छूट्यो चावँ जीव,
मत तू करी बघोतरी
राखी सजम सीव,

२६७

फिरँ भीड़ में सोधतो
तू किण नं मोटचार ?
'में' गमग्यो सहजा हुयो
चारो बेडो पार,

२६८

तू चाल्यो पग मांड कर
घरती भरसी साख,
इयां नहीं हामल भरै
लै उपाव कर लाख,

२६९

छोलै डोल खराद पर
ठोकं कील लुहार,
दुरगत स्थूँ ही गत मिलै
लट्टूँ सो संसार,

२७०

मकड़ी ज्यूं जालो गुंथं
काढ देह स्थूँ तार,
माया ठगणी स्थूँ रचै
ओ दिखतो संसार,

२७१

रामधणख रो सतलड़ो
वांघ बीज रो पाग,
बादल आयो बीन वण
बड़ा रेत रा भाग,

२७२

अंध वासना उरवशी
चाह मेनका आप,
ओलख विसवामित्र है
थारै मन रो पाप,

२७३

सूरज रै तप बल चढघो
गगन पागलो नीर,
तिलक फरघो बिजली समझ
तू ठा इण रै सीर,

२७४

नंण कोटड़ी मे वसै
सपनै भेली साच,
अकन कुंआरी आण दै
कद निज सत नै आंच

२७५

सहस धार अमरित झरै
के आणद रो पार ?
पण विसन्यां नै लत पड़ी
फिरै जै रै लार,

२७६

घुमा चकरियो वेग स्थूँ
थिर ज्यूँ दिखसी चाल,
करै अथग यितप्रग करम
दीसै पड्या निढाल,

२७७

वगत वगत री बात है
कुण राजा कुण रंक ?
पड़ी ठोकरा धूल री—
आभं चढगी खंख,

२७८

सावल सबड़ी राबड़ी
पाड़ी मती सपीड़,
मत कर घणा सुवादिया
देसी काल गदीड़,

२७९

थारै घर रै आंगणै
जड़िया रतन हजार,
तनै दीखसो भोलिया
कचरो नाख बुहार,

२८०

दीठ नहीं तो सबद है
कलम चिड़ी रो वीठ,
मत कर कालो वापरयो
धोलो कागद नीठ,

२८१

ऊबो जठे अगूण है
सिरक्यां वो आयूँण,
आगं पाछें पग वियां
भुवें गगन री भूण,

२८२

गांठ खुल्यां लांबी ठुवें
ज्यूं उलक्ष्योड़ी डोर,
मन री गांठां खोल तू
डीघो वणसी और,

२८३

गांव जठं गेला वठं
ढुकसी छेकड़ धाप,
समद नहीं नूतं नदघां
भाजी आवं आप,

२८४

अगन धधकतो न्यावडो
घट री काची देह,
घिन कुमार रो कालजो
करं न आंधो नेह,

२८५

जीवण फद निज मे मजल
ओ तो मारग जीव,
आसंगा वंठो तकं
इयां न आवं सोंव,

२८६

छात गगन भू आंगणो
संजम री सुख सेज
पोढे वो ही राखसी
आतम मणी सहेज ?

२८७

धुकसी लकडी एकली
कोनी पकड़ आग,
समघरमी सागै हूयां
जागै राग विराग,

२८८

तपे अंधेरें में दियो
निरमै मन नै साध,
असुर होलका गोद में
बैठो ज्यूं परलाद,

२८६

बिना पात्र जोगो हुया
निरयक देणो बोध,
सिंघण रं पय वासतं
ठाव कनक रो सोघ,

२८७

चावं करणी साधना
मत धारीजे भेल,
रह तू सहज भ्रमेद वण
भेद बढावैं धंख,

२८८

चिणगारी कोनी सकं
लगा लौह मे आग,
काठ हियं सूती अलस
परस्यां ज्यासी जाग,

२६२

कोनी कीं पल्लें पड़ें
कोई नें आराध,
अकल सरीरां ऊपजें
निज आत्म नें साध,

२६३

ध्यान ध्याण रो मंत्र है
घूटी कोनी ध्यान,
ध्यासी वो ही त्यागसी
परिग्रह नें विष मान,

२६४

पुरषार्थ वो ही करम
जीतैं जको विकार,
निरवरती आत्म धरम
परवरती संसार,

२६५

गोरख बंधो समझ जे
तू छोड़्यो संसार ?
फेर लगायो पंथ रो
क्या न टंटो लार ?

२६६

मोह मुगत मनड़ो हूँ
खिण खिण राख्यो जाग,
यित प्रग वण अभ्यास स्यू
मतं विणससी राग,

२६७

वजर मान नारेल रं
हिय मे करुणा नीर,
पोखं आखी जूण न
संवेदन री सीर,

२६८

निन्दा सुण ज्यावै चिगर
जस गायां पोगीज,
कठपुतलो वो बापड़ी
निज पर नहीं पतीज,

२६९

पोथा ढोयां ग्यान रा
कोनी हुवै उजास,
जे तू चावै च्यानणो
निज रो दिवलो चास,

३००

मत इनरचां नै रोस तू
अँ जावक निरदोष,
थारो वारी अलख मन
वीं रा भौंटा कोस,

३०१

भाव भूप री पालकी
ढोवै सबद कहार,
मिल राजा ल्यू मूढ क्यूं
फिरै कहारां लार ?

३०२

डाल पान मे उलझ मत
जाण्यो चावै भेद,
मूल पकड़ ज्यासी समझ
सत है एक अभेद,

३०३

मन री वांवी मे पड्या
मिणधर सरप अनेक,
अटकल ल्यूं मिण ले सकै
जिण मे सहज विवेक,

३०४

तप करसी भेली हुसी
उरजा आपो आप,
वर्ण विन्ध्यां उपजोग वा
दुरवासा रो शाप,

३०५

समद मय्यो जद नीसरचो
अमरित सागै जैर,
जद का जूझै सुर असुर
कोनी निवड़चो वैर,

३०६

जावक काला कोयला
करसी सिलग उजास,
उरजा वणसी वासना
तप रो तूली चास,

३०७

नान्ही सी कीडी भरं
जद वटको चोयीज,
दावी मती विचार नं
डस लं लो पीडीज,

३०८

छोडं कोनी ठौड पण
किया उडं आ आख ?
घणी अचपली दीठ री
कोनी दीसं पाख,

३०९

आसी परणन नं तने
मरण फूठरो पीव,
हयलेवं री वगत पण
मती लकोई जीव,

३१०

राम नहीं रावण नहीं
मैं विचार रा नांव,
एक सुदुघ दूजो कुदुघ
वाल्मो निज रो गांव,

३११

जावक नान्ही कांकरी
नीर गहन गंभीर,
पण मत फेंकी पीढ़ स्थूं
सगला हुवै अधीर,

३१२

बडा हुवै बां नै नहीं
निज बडपण रो मोद !
मोती रो मैं मावड़ी
नहीं सीप नै बोध,

३१३

अपग हुवै सत कद मंडे ·
भोला उण रा खोज ?
क्यूँ निरयक भमतो फिर
सत अंतस मे सोझ,

३१४

करै नहीं ज्यूँ रूप नै
विम्बित आंधो काच,
विनां हुया निरमल हियो
कद अणभूतै साच ?

३१५

मुगली रो गेलो नहीं
बंघी बंधाई लीक,
बठै पूगसी सत वै
चालै जका अलीक,

३१६

बाथ घाल ली सबद रै
वणग्यो सबद बलाय,
सिघ अपड़ियो स्यालियो
जे छोडै तो खाय,

३१७

चाव देणी साच पर
जे तू थारी छाप ?
साच सिरक ज्यासी परं
वा कद सबै घिणाप ?

३१८

समता नै समता बणा
अनुकंपा में जाग,
जणां समझसी जीव तू
कांई' राग अराग ?

૩૧૬

ઘણો ગહન આતમ ધરમ
પૂર્ણે બઠે અભેદ,
દીઠ સાઘ લે લોપસી
બીં લિણ સગલાં ભેદ,

૩૨૦

હેલા મારં મજલ નં
ઘરં ન આઘો પંડ,
સંવટીજે ગેલો નહોં
ઈયાં ઠૂયાં સ્થૂં ઇંડ,

૩૨૧

મુગતી ઇંછં જીવ જે
ફોની છૂટ્તો રાગ,
વિણસં ઇંછ્યા વીજ જદ
જગસી હિયં અરાગ,

३२२

ममता त्यागं पण हुवै
निरमम कोनी संत,
वीतराग रो अरथ है
करुणा सिन्धु अनन्त,

३२३

हुवै न जिण रं हेत में
रंच सुवारथ गंध,
मिनखपणै रा पुसव वै
सांसां वसै सुगंध,

३२४

नहों तूंतड़ें में घलै
ज्युं काढ्योड़ो धान,
वियां न पाछो वावड़ें
वचन कयोड़ो जाण,

३२५

जुड़ै नहीं ज्युं हंख स्युं
एकर भड़ियो पान,
बियां न फाट्यो मन मिलै
निरथक खेंचाताण,

३२६

हेम कांचली तावड़ी
धानी साड़ी खेत,
वण ठण बंठी गोरडी
मारवाड री रेत,

३२७

आड़ावल मार्य मुगट
चामल गल रो हार,
जंसारण पग रोपिया
मारवाड मोटघार,

३२८

माथे अंबर मोलियो
काँधे सूरज ढाल,
लू रो लपको टोरड़ो
मरुघर मरद मुँछाल,

३२९

रवे कुअँ रँ मांय नै
जियाँ कुअँ रो छांव,
बियाँ मतलबी मिनख रँ
भवं न बीँ रो गांव,

३३०

रात डावड़ी बगत री
आंचल ओलै ले'र,
सूरज रो दिवलो चढी
फेरुं गगन मुँडेर,

देस नहीं मरुदेस तो
 मृगमद जिसे न गन्ध,
 सुरसत रं भडार में
 दूहै जिस्यो न छन्द,

पांच महाव्रत

अहिंसा

जे में माहं, सामलो
हणसी म्हारा प्राण,
नहीं अहिंसा आ जकी
उपजं डर रं पाण !

ओ सरीर रो धरम है
कोनी तत रो ग्यान,
जकी जीण री वासणा
परतख हिंसा जाण !

थकां सामरथ छोड दें
जद विवेक स्यू राग,
जुडें अहिंसा अभय स्यू
बो है सहज विराग ।

खमा भाव आत्म धरम
अनुकंपा मे मूल,
दीठ हुया अतरमुखी
कुण काटा, कुण फूल ।

सत्य

मुगत दीठ राख्यां विन्यां
कद अणभूतै साच ?
परतख करसी साच नै
अनेकांत रो काच,

कियां अकथ नै कथ सकै
सवद वापड़ी थूल ?
सवद मोह में मत पड़ी
मारग ज्यासी भूल ।

साच दूध पण काचरो
मन रा मिनख विकार,
दही जर्म दुध रो हुया
अंतरमन अविकार ।

अपरिग्रह

परिग्रह मूल विकार रो
संचं मोटो पाप,
तिसणा स्यू तिसणा वर्ध
! कोनी आवं धाप,

करं काल रो चित्तणा
मती काल नं भूल,
खिण स्यू आगं सोच मत
खिण है साच समूल,

चावं मुगती जोंवतो
कर निज नं निरलेप,
लोभ कतरणी मत चला
सिवं जतो ही नेप !

अस्तेय

तिसणावश जे मिनख लै
वनफल नै ही तोड़,
वा चोरी खिण में बंधै
करम चीकणां कोड़,

नहों दरब स्यू भाव स्यू
लागै चेतण आल
तत पाचां नै सेव कर
आडी संजम पाल,

मन स्यूं ओलै रह सकै
चोरी कोनी जीव,
पड़्यो अंधेरै मे रवै
छानो कदै न घीव ?

ब्रह्मचर्य

सुख ही दुख रो बीज है
मन आसूदो खेत,
मत वो पड़सी लाटणो
मिनख वगत सर चेत,

जे चाव इण खेत मे
निपज परमानन्द,
बिरमचरज त्यूं बांध दं
उरजा भाडो वंध,

घास फूस कोनी वधं
कोनी चढं निनाण,
रम आत्म में जीवड़ो
ज्यासी वण भगवान !

